माध्यमिक स्तर पर अध्यायरत शासकीय एवं गैर–शासकीय विद्यालय के अध्यापक–अध्यापिकाओं में पर्यावरण जागरूकता तथा आत्म–सम्बोध का तुलनात्मक अध्ययन– अलीगढ़ जनपद के सन्दर्भ में

डॉ0 मन्जू यादव*

सारांश

माध्यामिक स्तर पर अध्यापक पर्यावरण जागरूकता तथा आत्म–सम्बोध से परिपूर्ण होकर अपनी संस्कृति एवं मूल्यों को ध्यान में रखकर ही अपने विद्यार्थियों में पर्यावरण जागरूकता तथा आत्म–सम्बोध का मापन कर उन्हें उचित दिशा की ओर प्रेरित कर सकता है, और स्वयं अपने कर्त्तव्यों का आत्म–सम्बोध के साथ पालन कर समाज एवं राष्ट्र की प्रगति में अपनी महती भूमिका निभा सकता है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में जनपद अलीगढ़ के माध्यमिक स्तर पर अध्यापनरत् शासकीय एवं गैर शासकीय विद्यालय के अध्यापक– अध्यापिकाओं को सम्मिलित किया गया है।

प्रस्तावना

समाज में शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है, जो मनुष्य को अन्धकार से निकालकर प्रकाश युक्त वातावरण की ओर ले जाती है। इस प्रक्रिया के तीन मुख्य अंग होते है; अध्यापक, – विद्यार्थी और पाठ्यक्रम। इस प्रक्रिया का महत्वपूर्ण अंग अध्यापक होता है। अध्यापक विद्यालय की समस्त गति–विधियों का केन्द्र बिन्दु होता है। अध्यापक की ही विद्यार्थियों के भविष्य का निर्माता, समाज और राश्ट्र का निर्माता कहा जाता है। जिस प्रकार किसान अपनी बुद्धि और कौशल के द्वारा खेत में भिन्न–भिन्न प्रकार की फसलों का उत्पादन करता है। उसी प्रकार अध्यापक अपनी बुद्धि योग्यता एवं क्षमता के आधार पर बालकों में एक ऐसी ऊर्जा की ज्योति जगा देता है, जिससे बालक विभिन्न क्षेत्रों में ज्ञानार्जन करते हुए देश की समृद्धि एवं विकास में योगदान हेतु महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करता है।

विद्यार्थियों में अनुकरण की प्रवृत्ति बहुत प्रबल होती है, और अध्यापक उसके लिए आदर्श होता है। इस सन्दर्भ में गाँधी जी ने कहा था कि ''शिश्य की यथार्थ पाठक पुस्तक उसका अध्यापक है। अध्यापक ही विद्यालय एवं शिक्षा व्यवस्था का वास्तविक गव्यात्मक शक्ति है। अध्यापक ही वह शक्ति है, जो प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से आने वाली पीढ़ी पर अपना प्रभाव डालता है।

अध्ययन की आवश्यकता

मनुष्य, समाज और देश के निर्माण एवं विकास में माध्यमिक शिक्षा का विशेश महत्वपूर्ण योगदान है। माध्यमिक शिक्षा की नींव पट ही व्यक्ति, समाज और राष्ट्र की प्रगति के सांस्कृतिक एवं वैज्ञानिक प्रगति निर्भर करती है।

पर्यावरण जागरूकता एवं आत्म सम्बोध के अध्ययन का महत्व अथवा आवश्यकता इसलिए भी है; क्योंकि इसके मापन द्वारा, उचित दिशा में व्यक्ति अपने उद्देश्य को प्राप्त करने का प्रयत्न करता है। माध्यमिक स्तर पर अध्यापक पर्यावरण जागरूकता एवं आत्म सम्बोध से पूर्ण होकर अपने मूल्यों को ध्यान में रखकर ही अपने विद्यार्थियों के आत्म–सम्बोध का मापन कर उन्हें उचित दिशा की ओर प्रेरित कर सकता है; और स्वयं अपने कर्त्तव्यों का आत्म–सम्बोध के साथ कर्त्तव्यों का पालन कर समाज एवं राश्ट्र की प्रगति में अपनी महती भूमिका अंदा कर सकता है।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

1. माध्यमिक शासकीय विद्यालय के अध्यापक–अध्यापिकाओं के आत्म– सम्बोध एवं पर्यावरण जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. गैर शासकीय विद्यालय के अध्यापक–अध्यापिकाओं के आत्म–सम्बोध एवं पर्यावरण जागरूकता का

*असि0 प्रोफेसर, बी0एड विभाग, श्री टीकाराम कन्या महाविद्यालय, अलीगढ़(उत्तर प्रदेश)

तुलनात्मक अध्ययन करना।

3. माध्यमिक शासकीय एवं गैर–शासकीय विद्यालय के अध्यापकों के आत्म–सम्बोध पर्यावरण जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. माध्यमिक शासकीय एवं गैर–शासकीय विद्यालय अध्यापिकाओं के आत्म–सम्बोध एवं पर्यावरण जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पना

1. माध्यमिक शासकीय विद्यालय के अध्यापक–अध्यापिकाओं के आत्म–सम्बोध एवं पर्यावरण जागरूकता में कोई सार्थ अन्तर नहीं है।
2. माध्यमिक गैर–शासकीय विद्यालय के अध्यापक अध्यापिकाओं के आत्म–सम्बोध एवं पर्यावरण जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. माध्यमिक शासकीय एवं गैर–शासकीय विद्यालय के अध्यापकों के आत्म–सम्बोध एवं पर्यावरण जागरूकता कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
4. माध्यमिक शासकीय एवं गैर–शासकीय विद्यालय की अध्यापिकाओं के आत्म–सम्बोध एवं पर्यावरण जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

प्रस्तुत शोध कार्य में आत्म–सम्बोध एवं पर्यावरण जागरूकता का सर्वेक्षण विधि को आधार मानकर शोधकर्त्ता ने शोध कार्य को आगे बढ़ाया है।

जनसंख्या एवं न्यादर्श

अध्ययन में जनपद अलीगढ़ के माध्यमिक स्तर पर अध्यायनरत् शासकीय एवं गैर–शासकीय विद्यालय के अध्यापक–अध्यापिकाओं को सम्मिलित किया गया है।

चयनित विद्यालयों तथा न्यायदर्श के रूप में चयनित अध्यापक–अध्यापिकाओं का विवरण तालिका में प्रस्तुत है।

तालिका सं0 1
कुल चयनित विद्यालयों एवं अध्यापक–अध्यापिकाओं का विवरण

	शासकीय	गैर–शासकीय	कुल योग
अध्यापक	50	50	100
अध्यापिकायें	50	50	100
विद्यालय	30	20	50

अध्ययन के निष्कर्ष

1. शासकीय विद्यालय के अध्यापक– अध्यापिकाओं के आत्म–सम्बोध एवं पर्यावरण जागरूकता के विभिन्न स्तरों के आत्म–सम्बोध तथा पर्यावरण जागरूकता में अन्तर नहीं पाया गया है। इसका कारण यह हो सकता है, कि शासकीय अध्यापक अध्यापिकाओं का चयन एक निश्चित माननीकृत एक लम्बी प्रक्रिया के तहत होना है; जिसमें गुजरने से उनके आत्म सम्बोध एवं पर्यावरण जागरूकता में दृढ़ता आती जाती है।

2. गैर–शासकीय विद्यालय के अध्यापक–अध्यापिकाओं के आत्म–सम्बोध एवं पर्यावरण जागरूकता में अन्तर नहीं पाया गया है। इसका कारण यह हो सकता है कि माध्यमिक स्तर पर गैर–शासकीय क्षेत्र में शिक्षण कार्य करने वाले अध्यापकों की शैक्षिक योग्यता कम से कम परास्नातक है; यह तथ्य मैंने अपने अध्ययन में पाया है, इस स्तर की शिक्षा अर्जित करते–करते उनमें पर्याप्त आत्म–सम्बोध एवं पर्यावरण जागरूकता में दृढ़ता आ जाती है।

3. शासकीय गैर–शासकीय अध्यापकों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है। इसका कारण यह हो सकता है, कि शासकीय अध्यापकों में शैक्षिक एवं प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों की समतुल्यता में गैर–सरकारी अध्यापकों की शैक्षिक योग्यता के पाठ्यक्रमों की कठिनता स्वर में नित–प्रतिदिन वृद्धि हो रही है, जिससे उनके आत्म–सम्बोध एवं पर्यावरण जागरूकता में दृढ़ता विकसित हो जाती है।

4. शासकीय एवं गैर–शासकीय अध्यापकों के विभिन्न स्तरीय आत्म–सम्बोध एवं पर्यावरण जागरूकता में कोई अन्तर नहीं पाया गया है। इसका कारण यह हो सकता है कि शासकीय अध्यापिकाओं के शैक्षिक एवं प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों की समतुल्यता में गैर–शासकीय अध्यापिकाओं के शैक्षिक पाठ्यक्रमों की कठिनता स्तर में प्रतिदिन वृद्धि हो रही है; जिससे उनके आत्म–सम्बोध एवं पर्यावरण जागरूकता में दृढ़ता आ जाती है।

शैक्षिक उपयोगिता एवं सुझाव

1. अध्यापकों को शिक्षण कार्य में लाने के लिये चयन प्रक्रिया में अध्यापक मूल्य एवं आत्म–सम्बोध एवं पर्यावरण जागरूकता परीक्षण को शामिल किया जाय।
2. अध्यापकों की चयन प्रक्रिया में प्रतियोगिता के आधार पर शिक्षण अभिरूचि, मनोवैज्ञानिक, दार्शनिक, शिक्षण तकनीक आधारित परीक्षा को शामिल किया जाये।

3. शिक्षण कार्य को गुणवत्ता पूर्ण एवं अद्यतन बनाये रखने के लिये सेवा कालीन प्रशिक्षण कार्यक्रमों का सतत् रूप से आयोजन अनिवार्य रूप से किया जाना चाहिए।
4. मूल्य परक शिक्षा के लिए अध्यापकों को सुदृढ़ आत्म–सम्बोध, तथा पर्यावरण के प्रति जागरूक होना चाहिए। अतः इस प्रकार अध्यापकों का चयन निश्पक्ष एवं पारदर्शी चयन प्रक्रिया द्वारा किया जाना चाहिए।
5. किसी भी कार्य उपलब्धि को आत्म–सम्बोध प्रभावित करता है इसलिए उत्तम–शिक्षण के लिये सुदृढ़ आत्म–सम्बोध एवं पर्यावरण के प्रति जागरूक अध्यापक तैयार किये जाय।
6. आत्म–सम्बोध एवं पर्यावरण जागरूकता के लिए शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों के अभ्यास पक्ष पर ध्यान दिया जाना चाहिए।
7. कार्यरत अध्यापकों के लिए मूल्यपटक, आत्म–सम्बोध एवं पर्यावरण जागरूकता हेतु रिफ्रेशर कोर्स अनिवार्य किये जाय। ताकि अध्यापकों को नयी खोजों से अवगत कराया जा सके।
8. पर्यावरण जागरूकता के लिए छात्रों की समय–समय पर रैली निकाली जाय। जिससे पर्यावरण के प्रति समाज को जाग्रत किया जा सके।
9. पर्यावरण जागरूकता के लिए पोस्टट प्रतियोगितायें आयोजित की जाय। पॉलिथिन, प्लास्टिक बैग आदि पर प्रतिबन्ध लगाया जाय।
10. अध्यापक–अध्यापिकाओं को संगोष्ठी कार्यशाला आदि कार्यक्रमों से सम्मिलित होने के लिए कर्त्तव्य अवकाश दिया जाये।

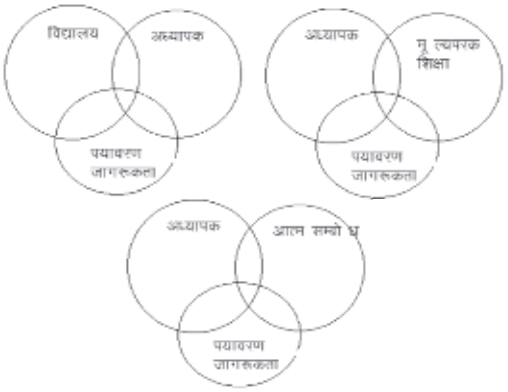

सन्दर्भ ग्रन्थ

सक्सैना सरोज (2003): शिक्षा के दार्शनिक एवं समाज शास्त्रीय सिद्धान्त, मेरठ प्रकाशन।

कल्पना अग्निहोत्री और अटल बिहारी; ''प्राथमिक स्तर पर अध्यायनरत सरकारी एवं गैर सरकारी स्कूल के शिक्षण–शिक्षिकाओं के आत्म–विश्वास का तुलनात्मक अध्ययन।''

गुप्ता रैनू (2006): उदयी मान भारतीय समाज में शिक्षा, नई दिल्ली।

भार्गव महेश (1999): ''मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन, आगरा, भार्गव भवन।

श्रीवास्तव आर0एन0 (2002): ''पर्यावरण जागरूकता परीक्षण'', आगरा।

श्रीवास्तव डी0एन0 (2003): अनुसंधान की विधियाँ, आगरा साहित्य प्रकाशन।

कुलश्रेश्ठ एस0पी0 (2000): शैक्षिक तकनीकी के मूल आधार आगरा अग्रवाल पब्लिकेशन्स।